भास्कर खास • बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों को मिली पहले चरण में सफलता

कलौंजी के तेल से कैंसर की दवा बनाने की तैयारी

डॉ.रवि वाय

डॉ. शिवलाल

डॉ.सुमेर सिंह

सादिक अली. अजमेर | राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र तबीजी के वैज्ञानिक ने कलौंजी तेल में मिलने वाले थाइमोक्यूनॉन से कैंसर सेल पर नियंत्रण करने में सफलता हासिल की है। अब इस रिसर्च को एनिमल मॉडल (सफेद चूहे) पर आजमाने के लिए आईसीएमआर (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) नई दिल्ली को प्रस्ताव भेजा जा रहा है। वैज्ञानिक रवि वाय के साथ ही यहीं के दूसरे वैज्ञानिकों ने भी कलौंजी में तेल की मात्रा और पैदावार बढ़ाने के लिए दो प्रजातियां एएन-1 और एएन-20 पर काम शुरू कर दिया है। डॉ. रवि वाय ने साढ़े तीन साल के रिसर्च में पहले थाइमोक्यूनॉन को इस स्तर पर तैयार किया कि उसका उपयोग कैंसर सेल पर किया जा सके।

कोविड में दी दवा से मिला क्लू, उसके कंटेंट और थाईमोक्यूनॉन में समानता

डॉ. रवि वाय के अनुसार मुस्लिम धर्म की किताबों में कलौंजी को मौत के अलावा हर बीमारी की दवा बताया गया है। इस पर कलौंजी पर रिसर्च शुरू किया। पीएचडी का टॉपिक भी बनाया। कोविड के शुरू में जब कोई दवा नहीं थी तब जो दवा दी गई उसके कंटेंट और थाइमोक्यूनॉन में बेहद समानता थी। इस पर 2019 से 2023 तक थाइमोक्यूनॉन को कैंसर सेल पर प्रयोग किया तो यह कैंसर सेल को तेजी से कम करने में कामयाब रहा। यह भी सामने आया कि कैंसर ट्यूमर पर भी यह असर दिखा सकती है बशर्ते इसे दवाई के रूप में उपयोग किया जाए। इसलिए अब इसे आईसीएमआर के साथ एनिमल मॉडल पर टेस्ट करने की तैयारी है।

एएन-1 और एएन-20 प्रजातियां की ईजाद , किसानों को होगा लाभ

यहीं के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुमेर सिंह ने बताया कि केंद्र में हमने एएन-1 (अजमेर नायजेला) और एएन-20 नाम से कलौंजी की दो नई प्रजातियां ईजाद की थीं। देसी और पुरानी कलौंजी में तेल की मात्रा 4 से लेकर 12 प्रतिशत तक ही पाई जाती है। लेकिन एएन-1 में 25 प्रतिशत तेल की मात्रा पाई गई। वहीं एएन-20 में 28 प्रतिशत तक तेल मिला। इन दोनों प्रजातियों के बीजों को राजस्थान के अलावा मप्र, हरियाणा, छत्तीसगढ़ बिहार, झारखंड भेजा गया है जिससे वहां इसकी पैदावार बढ़ाई जा सके। इससे वहां के किसानों को भी फायदा होगा। **शेष** | पेज 12